CIRCULAR CITY

Maja Djolić, Aleksandra Vučinić, Nataša Atanasova and Günter Langergraber

Book title: Circular City
Authors: Maja B. Đolić, Aleksandra Vučinić, Nataša Atanasova and Günter Langergraber
Translated into Hindu by: Biplav Pagéni, MPhil in Engineering for Sustainable Development
Illustrations: Ana Popović (Inst@ananana_ 14, @ananana_design)
Illustration of Cover page: Tea Nikolić (Inst@prismriver_)
©Circular City COST Action CA17133
Grant Holder Institution:
Universität für Bodenkultur Wien (BOKU)
Department of Water, Atmosphere and Environment
Institute of Sanitary Engineering and Water Pollution Control
Muthgasse 18, 1190 Vienna, Austria

Chair of the Action:
Dr. Günter Langergraber
Head, Department of Water, Atmosphere and Environment
guenter.langergraber@boku.ac.at
Co-Chair of the Action:
Dr. Nataša Atanasova
University of Ljubljana, Faculty of Civil and Geodetic Engineering
natasa.atanasova@fgg.uni-lj.si
Reuse is authorized provided the source is acknoledged. It can be used for educational purposes for the appropriate reference.

This publication is based upon work from COST Action CA 17133 "Implementing nature based solutions for creating a resourceful circular city (Circular City Re.Solution)" supported by COST (European Cooperation in Science and Technology).

COST (European Cooperation in Science and Technology) is a funding agency for research and innovation networks. Our actions help connect research and initiatives across Europe and enable scientists to grow their ideas by sharing them with their peers. This boosts their research, career and innovation.

www.cost.eu

COST Action CA17133

Grant Holder Institution:

एक सुहाना दिन।

अपने स्कुल के दिन याद करते हुवे, फातिमा और ललित बचपन कि बातें कर रहे थे। वो यादगार पल और वो शरारत के दिन पे हस्ते हुवे, शहर कि नदि के आनन्द लेते हुवे, अपने घर के रासते पर चल रहे थे।

नदीकी खुशनुमा लहरोंको देखते हुए फातिमा ने ललित से कहा: "क्या तुम जानते हो कि पानी हमारे शरीर के लिए कितना महत्वपूणर् है? मानवका शरीर ७०% पानी से बना हुवा है"।

हम इनसान, खाने के बिना २० दिन टक जी सकते है, पर पानी के बिना हम सिफर् ३ दिन रह सकते है। पानी हम सब जीवित पर्णियो के लिए कितना महत्वपुणर् हैं, ये हम जनाते भी नही है।

"हम लापरवाही से घरों और उद्योगों से गंदा पानीको सीधे प्राकृतिक जल, नदियों और झीलों में छोड़ देते हैं। ऐसा करके, हम पानी में रहने वाले सभी जीवोंको खतरे में डाल रहे हैं: जेसे केकड़े, मछली, पूरे जलीय पौधे की दुनिया, साथ ही जीवित ऐसे प्राणी जो पानी पर निभर्र हैं, लेकिन उसमें नहीं रहते सभीको खतरेमे डाल रहे हैं"।

"इसी तरह, किनारे पर मेंढकों के लिए भी ऐसा पर्दूषित पानी अच्छा नहीं है"।

“यह बेहतर हो सकता है अगर हम इस्तेमाल किए गए पानी को जलमागोर्ं में डालने से पहले शुद्ध करल। इस तरह, हम आने वाली पीढ़ियों के लिए सतह और भूमिगत जलको संरक्षित कसर्क्तेहैन। पानी पृथ्वी गर्ह पर सबसे महत्वपूणर् संसाधनों में से एक है।"

फातिमा कि बातें दिलचस्पी से सुनते हुए, ललित अचानक फिसल ने वाला था पर सहि समय पर फातिमा ने अपना हात आगे बडाकर उसे बचा लिया।

ललित अपना फिसलने कि वजे धुडने के लिए पिछे मुडते हुवे उसने फूत्पाथ पे एक प्लास्टिक बोटेल पडा हुवा देखा।

"एसे कैसे फूत्पाथ पे प्लास्टिक कचरा कोइ फेक सकता हैं, किसिको चोट लग सकित हैं एसे , समझ नही आता मुझ।", चिड़ते हुवे ललित ने फातिमा से कहा।

क्या उस बेवकूफको पता भी हैं, प्लास्तिकों पर्कृति मे घुल्ने के लिए १०० साल से भी ज्यादा लगता हैं।

प्लास्टिक को रिसाइकिल किया जा सकता है, और एक नया सामान बनाया जा सकता है। और यह बिल्कुल भी मुश्किल नहीं है। लोगोंको केवल sahi स्थान, कंटेनर या रीसाइक्लिंग बिन में प्लास्टिक कचरेको फेंकना चाहिए। मैं हर समय ऐसा करता हूं और मेरे लिए कचरेको कागज, धातु, प्लास्टिक और कांच के कंटेनरों में छांटना मुश्किल नहीं है। जब मैं ऐसा करता हूं तो मुझे अच्छा लगता है। मुझे पता है कि मैंने अपने लिए और पयार्वरण जिसमें मैं रहता हूं, दोनों के लिए कुछ अच्छा और उपयोगी किया है।"

इस तरह, हम जलवायु परिवतर्न पर अपने पर्भावको कम करसक्तेहैं। अत्यधिक सूखा और बाढ़ का कारण हि मानव गतिविधियों है जो जलवायुको बदल रहे हैं। इन परिवतर्नों से कुछ पौधों और जानवरों की पर्जातियां भी गायब हो सकती हैं", ललित ने निष्कषर् निकाला।

"फातिमा, हम पराकृतिक संसाधनोंका अत्यधिक उपयोग कर रहे हैं: पानी, अयस्क, रेत और बजरी, जंगल... हमारे पास केवल एक गरह है, और अभी हम इसका उपभोग कर रहे हैं जैसे कि हमारे पास दो हों। हम लंबे समय से शरेय पर रह रहे हैं।" और हम आने वाली पीढ़ियों से संसाधन उधार लेरहे हैं। हम उनके लिए किस तरहका भविष्य छोड़ रहे हैं, अगर हम उस वाहि एकमातर् घरको नष्ट कर दें जिसमें वे रह सकते हैं?"

जब ये बात कर रहे थे, तब बारिश होने लगी, इसिलए फातिमा और लिलत एक पेड़ की चोटी के नीचे छिपने के लिए नजिदकके एक पाकर् की ओर भागे।

फातिमा ने ललित से कहा: "मैं पर्कृति से बहुत प्यार करती हूं, लेकिन मैं अपने शहर से भी प्यार करती हूं।" पर्कृति में, मुझे पेड़, घास और हरियाली पसंद है, और शहर में, मुझे मेरा स्कूल, दोस्त, साइकिल चलाना, गेंद के खेल पसंद हैं... मुझे सबसे ज्यादा अच्छा लगेगा अगर मैं पर्कृति और शहर को जोड़ सकूं, एक पराकृतिक शहर की तरह "

ललित फातिमा के सवाल का जवाब देते हुवे काहा "आजकल, यह आसानी से पराप्त किया जा सकता है।" यदि हम सभी पर्यास करें तो हम एक हरे भरे शहर में रह सकते हैं। क्या तुम्हे पता हैं, कि दीवारें और छतें भी हरी हो सकती हैं। अपने पसंदीदा पौधे को दीवार या छत पर उगाने की कलपना करें। तुमहारे आसपास की दीवारों या छतों पर उगने वाली स्वादिष्ट लाल स्टरॉबेरी। क्या यह अद्भुत नहीं होगा?"

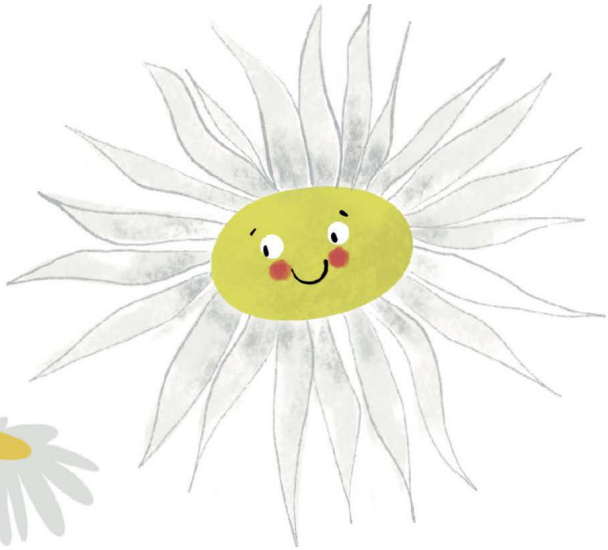

"वाह ये तो बहुत हि बडीयाँ होजाएगा," फातिमा ने उत्साह से कहा। मे अपने मनपसंद फूल लगाउंगी - गुलबहार मेरी माँ के लिए, मैं सुगंधित जड़ी-बूटियाँ, अजवायन, और तुलसी लगाउंगी, वह उन्हें अपने खाना में बहुत उपयोग करती है। यह बहुत अच्छा होगा!"

"हम अपने पसंदीदा पौधे उगा सकते हैं, और हरी दीवारें और छत के बगीचे हमें जलवायु परिवतर्न से बचा सकते हैं।" हमारा घर सदिर्यों में गमर् और गमिर्यों में ठंडा रहता है। इस तरह हम ऊजार् भी बचासकते हैं और जलवायु परिवतर्न पर पर्भाव कम करसक्ते हैं!"।

कुछ वक्त मे, बारिश रुक गई फिर फातिमा और लिलत ने पाकर् में अपनी सैर वापस शुरु किया थोडी हि दूर, उन्होंने अपने स्कूल के कुछ दोस्तों को देखा जो बेठके स्वस्थ फलोंका आनंद ले रहे थे।

फातिमा ने ललित से कहाँ: "क्या तुम्हे पता हैं कि दुनिया में उत्पादित भोजन का एक तिहाई भाग फेंक दिया जाता है?" सोचो अगर हम सारा बचा हुआ खाना जरूरतमंदों को दे दें या उसका इस्तेमाल किसी और काम में कर दें। यह केले का छिलका और सेब का अवशेष पौधों के लिए भोजन हो सकता है। पर्कृति हमें खिलाती है, और हम पर्कृति को खिलाते हैं। एक पुरा घेरा! दरअसल, पर्कृति के पास हर चीज का समाधान है। अच्छा होगा अगर हम अपने सभी दोस्तों को इस तरह जीने के लिए मना सकें, और उसमें सफल होने के लिए हमें खुद को शिक्षित करना होगा"।

ललित ने जवाब देते हुवे कहा "हां, मैं एक वास्तुकार बनना चाहता हूं और अपना खुद का हरी इमारत बनाना चाह्ता हूं!"। फातिमा ने कहा: यह एक अद्भूत सोच हैं ! मेरी इच्छा एक जीवविज्ञानी बनके पर्कृति कि अध्ययन करने की है"। राहुल उनकी बतें सुन्ते हुवे, राहुल ने बोला- मैं एक इंजीनियर बनूंगा और अपशिष्ट जल उपचार संयंतर्रों का निमार्ण करूंगा!"। अपने दोस्तों की उत्सुकता से सुनते हुए, रेखा ने अंत में कहा: "और मैं एक अथर्शास्तर्री बनाउंगी ताकि मैं तुम सभी को एक सकुर्लर शहर बनाने में मदद कर सकूं।

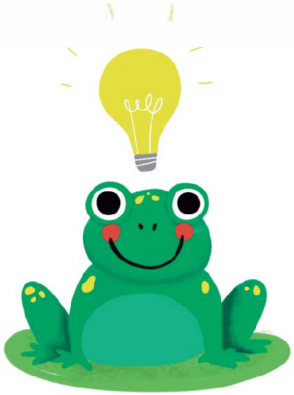

पर्कृति परेमियों के लिए सलाह।

- वीडियो देखकर जानिए सकुर्लर शहरों के बारे में कुछ:
  https://www.youtube.com/watch?v=R3NXLb-W1pg
- अजवायन और तुलसी के अलावा, कुछ अन्य सुगंधित जड़ी-बूटियाँ भी हैं। पता करें कि कौन से हैं और उन्हें अपने पड़ोस में देखें!
- अपने समुदाय में एक पेड़ लगाएं, उसकी देखभाल करें और उसका पालन-पोषण करें! इसे अपने साथ बढ़ने दे!
- कचरे को अलग करें और रिसाइकिल योग्य कचरे के लिए समपिर्त कंटेनरों में इसका निपटान करें! हर दिन पयार्वरण के लिए कुछ उपयोगी करने की कोशिश करें!
- पानी बचाएं! यदि आप अपने दाँत बर्श करते समय पानी को बंद नहीं करते हैं, तो कुछ ही मिनटों में नल से लगभग 11 लीटर स्वच्छ पानी निकल जाएगा। अपने दाँत बर्श करते समय नल को बंद करना सुनिश्चित करें!
- बिजली बचाओ! जब आप कमरे से बाहर निकलें या उनकी आवश्यकता न हो तो रोशनी और बिजली के उपकरणों को बंद कर दें!
- पयार्वरण संरक्षण के क्षेतर् में विषयों का अन्वेषण करें और अपने दोस्तों के साथ व्याख्यान और अपने छोटे पड़ोसियों के लिए व्याख्यान की व्यवस्था करें। इस किताब को इसमें आपकी मदद करने दें!
- पर्कृति में ज्यादा से ज्यादा समय बिताने की कोशिश करें। आनन्दित हों और हँसें!

छोटे जासूसों के लिए - अंतर खोजें।

अपना सकुलर्र ि सटीका चितर् बनाओ।